Николай Рубцов

নিকোলাই রুবংসভ

Встреча

সাক্ষাং

Стихи для детей на русском и бенгальском языках

Сиаваш Имани Пирсараи (Siavash Imany Pirsaraee) (1971 – 2025). Родился в Иране, в городе Энзали (Anzali). Врач и просветитель, марксист, пропагандист советской литературы; один из первых в мире создателей открытых интернет - библиотек. Он отсканировал тысячи и перевел на фарси и английский язык сотни советских книг.
Наша книга посвящена памяти этого великого человека...

Перевод на бенгальский: Шамсуддуха Таухид
Художник: Олег Малинин

বাংলা অনুবাদঃ শামসুদ্দোহা তৌহীদ
অলঙ্করণঃ ওলেগ মালিনিন

Слово к читателям

В Индии живут народы, которые говорят на многих языках и диалектах. Только официальных языков в Индии 22. Несколько десятилетий в СССР существовала программа по переводу советской литературы на языки народов Индии. Во времена СССР советские издательства переводили и печатали книги на 12 индийских языках. Миллионы индийцев узнавали о русской культуре и русской истории из книг советских издательств «Прогресс» и «Радуга», которые выпускали книги для Индии и других стран субконтинента. Наибольшее количество советских книг было переведено на хинди и бенгали, языки с самым большим числом носителей, одни из самых массовых языков в мире.

Почти за 50 лет, за те годы, что советская литература поступала в Индию, там возникла огромная группа поклонников русской литературы. Индийские дети полюбили книги Максима Горького, Аркадия Гайдара, Николая Носова, Корнея Чуковского и других русских писателей. Распад СССР в 1991 году стал трагедией не только для советских людей, но и для индийских читателей. На десятилетия в странах Индостана возник информационный вакуум – качественная и недорогая литература стала недоступна. После того как перестали поступать книги издательств «Прогресс» и «Радуга» поклонники русской культуры в Индии много лет собирали, хранили и реставрировали советские книги на индийских языках. В последние 15 лет этот процесс стал массовым: появились архивы переводных советских книг в Интернете. Эти книги стали переиздавать современные индийские издательства.

С недавних пор мы, участники международного проекта по переводу советской литературы, начали переводить и публиковать в Интернете, в свободном доступе, книги русских писателей, которых никогда ранее не переводили на индийские языки. Николай Рубцов один из этих авторов. Феноменально популярный на родине, Николай Рубцов был в Индии не известен.

Мы уверены, что благодаря нашей работе стихи Николая Рубцова полюбятся и взрослым и юным читателям, говорящим на бенгальском языке.

Стихи Николая Рубцова имеют все шансы понравиться читателям тропической страны, потому что всё то, что привлекало индийских читателей в советской литературе, есть и в стихах Рубцова. Это рассказы о суровой северной природе, о людях, которые кажутся холодными, но оказываются полными доброты и света, и это русский юмор, который всегда имеет оттенок грусти.

Евгений Спирин. Редактор сообщества «Николай Рубцов. Тихая моя родина».

ভারতে অনেক ভাষা ও বাকভঙ্গীতে কথা বলা বিভিন্ন জাতি বাস করে। । কেবল মাত্র সরকারী ভাষাই রয়েছে ২০ টির বেশি ।
সোভিয়েত ইউনিয়নে কয়েক দশক ধরে ভারতের বিভিন্ন ভাষায় সোভিয়েত সাহিত্য অনুবাদ করার একটি কর্মসূচি ছিল।
সেই সময়ে ১২ টি ভারতীয় ভাষায় বই অনুবাদ এবং মুদ্রণ হত। সোভিয়েত প্রকাশনা "প্রগতি" এবং "রামধনু" দ্বারা প্রকাশিত বইয়ের মাধ্যমে রুশ সংস্কৃতি এবং ইতিহাস সম্পর্কে ভারতের লক্ষ লক্ষ মানুষ জানতে পারতেন।
হিন্দি এবং বাংলা ভাষায় সবচেয়ে বেশি সংখ্যক সোভিয়েত বই অনুবাদ করা হয়েছে।
অনেক বছর ধরে রুশ লেখকদের বই পড়ার ফলে ভারতে রুশ সাহিত্যপ্রেমীদের একটি বিশাল গোষ্ঠী গড়ে উঠেছিল।
ভারতের পাঠকরা ম্যাক্সিম গর্কি, আর্কাদি গাইদার, নিকোলাই নোসভ, কোরনেই চুকভস্কি এবং অন্যান্য রুশ লেখকদের বই পছন্দ করতেন ।
কিন্তু ১৯৯১ সালে সোভিয়েত ইউনিয়নের পতন শুধু সোভিয়েত জনগণের জন্য নয়, ভারতীয় পাঠকদের জন্যও একটি ট্র্যাজেডি ছিল।
তবে এই বই ভারতে আসা বন্ধ হয়ে গিয়ে অবধি সেখানকার রুশ সাহিত্যের অনুরাগীরা বহু বছর ধরে সোভিয়েত বই সংগ্রহ, সংরক্ষণ এবং পুনঃস্থাপন করতে শুরু করেন।
গত ১৫ বছরে এই প্রক্রিয়া ব্যাপক হয়ে উঠেছে। অনূদিত সোভিয়েত বইয়ের ইন্টারনেট আর্কাইভ তৈরি হয়েছে, আধুনিক প্রকাশকরা এই বইগুলি পুনঃমুদ্রণ করতে শুরু করেছেন।
সম্প্রতি আমরা, সোভিয়েত সাহিত্য অনুবাদ প্রকল্পের অংশগ্রহণকারীরা, আগে কখনও ভারতীয় ভাষায় অনুবাদ করা হয়নি এমন কিছু রুশ লেখকদের বই অনুবাদ এবং প্রকাশ করতে শুরু করেছি।
নিকোলাই রুবৎসোভ এই লেখকদের একজন।
যদিও তিনি রুশ দেশে অত্যন্ত জনপ্রিয়, ভারতে তাঁকে কেউই জানেন না।
আমরা বিশ্বাস করি, যে আমাদের কাজের মাধ্যমে নিকোলাই রুবৎসোভের কবিতা সব বয়সের বাঙালি পাঠকদের মধ্যে জনপ্রিয় হবে।
নিকোলাই রুবৎসোভের কবিতা গ্রীষ্ম প্রধান দেশের পাঠকদের কাছে জনপ্রিয় হওয়ার সব সম্ভাবনা রয়েছে, কারণ সোভিয়েত সাহিত্যে ভারতীয় পাঠকদের যা কিছু আকৃষ্ট করত, তা সবই রুবৎসোভের কবিতায়ও রয়েছে।
এগুলি কঠোর উত্তরাঞ্চলীয় প্রকৃতির গল্প, এমন মানুষদের গল্প, যাদের বাইরে থেকে মনে হয় শীতল, অথচ তারা মমতা, উষ্ণতায় পূর্ণ।
এবং এতে রয়েছে খাঁটি রুশ হাস্যরস, যার মধ্যে সবসময় বিষণ্ণতার ছোঁয়া রয়ে যায়।

ইভগেনি স্পিরিন,
সম্পাদক, "নিকোলাই রুবৎসোভ- আমার শান্ত জন্মভূমি" সাহিত্য সম্প্রদায় ।

বন রক্ষক

এক বনে ছিল এক কাঠের বাড়ি
শত বছরের বেশি পুরোনো সেই বাড়ি
সেই বাড়িতে থাকত এক বুড়ো
ছেলেপুলেরা ডাকত পাগলা খুড়ো
লোকেরা বলত ভীষণ অপয়া
শত বছরেও মরলো না ঐ বুড়ো
কিন্তু বনের জন্য বুড়োর ছিল ভীষণ মায়া
তাই সেখানে পড়ত না কোনো অনিষ্টের ছায়া

Лесник

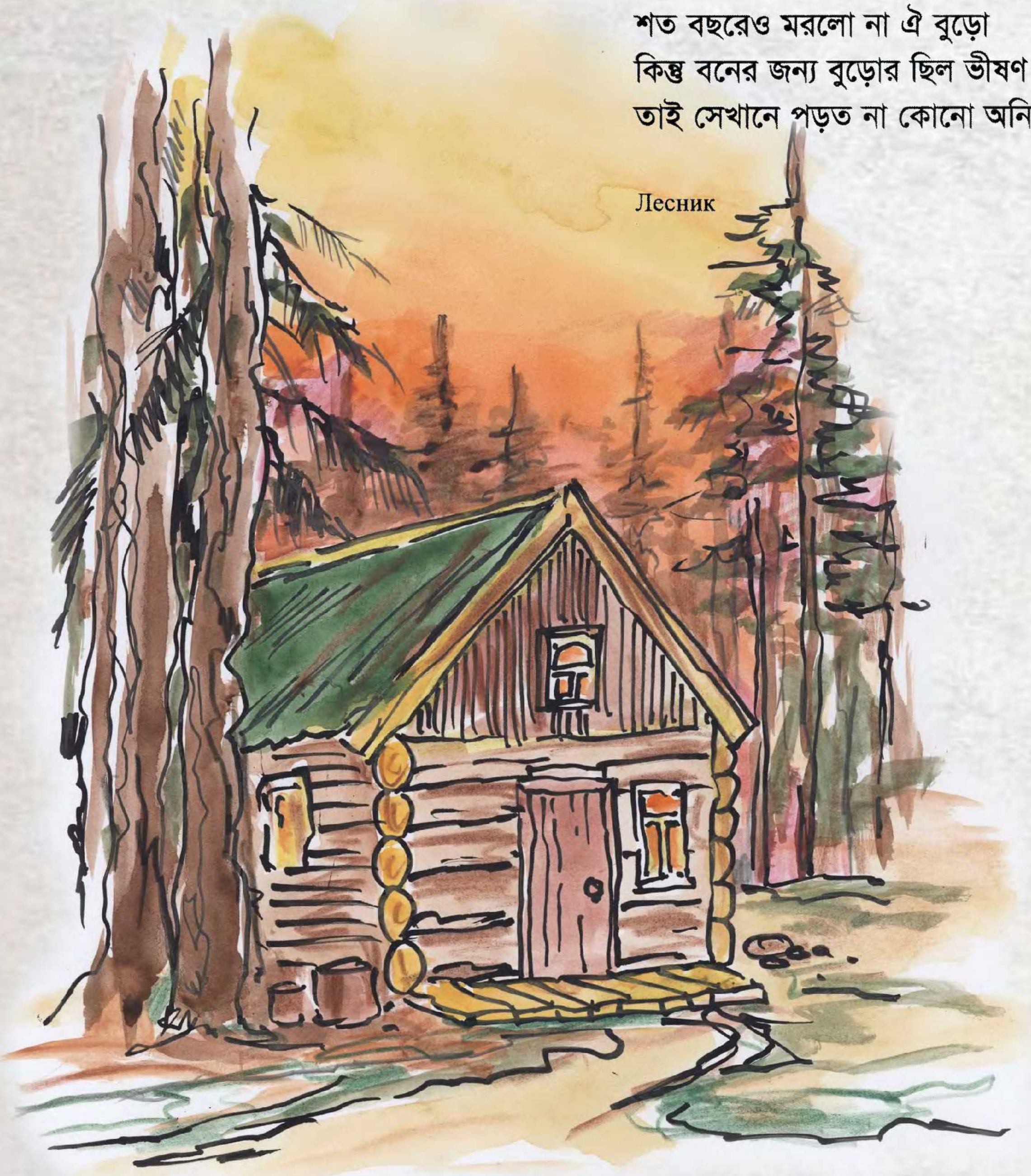

Лесник

Стоит изба в лесу
сто лет.
Живет в избе
столетний дед.

Сто лет прошло,
а смерти нет,
Как будто вечен
этот дед,

Как вечен лес,
где столько лет
Он всё хранил
от разных бед…

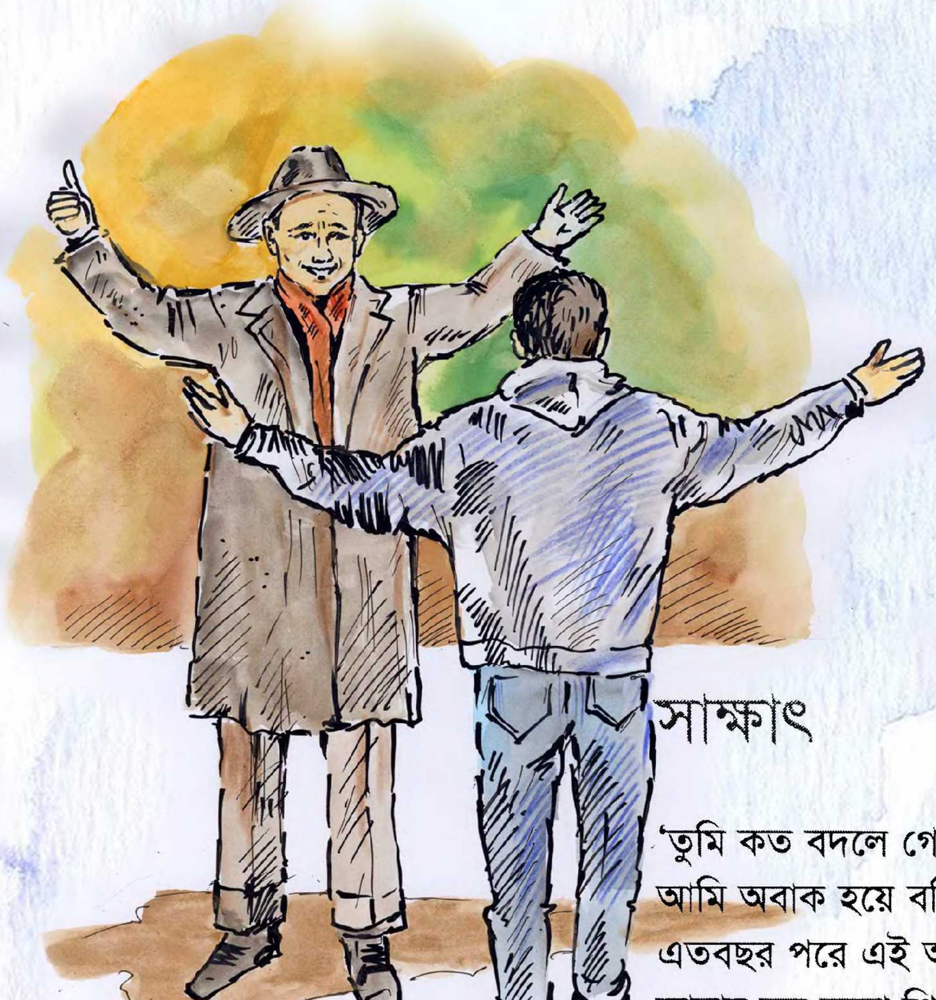

সাক্ষাৎ

'তুমি কত বদলে গেলে!'
আমি অবাক হয়ে বলি
এতবছর পরে এই অভিযোগ শুনে
আমার বন্ধু হলো শিশুর মতো দুঃখী
তাকে হেসে হেসে সান্ত্বনা দেই
বদলে যাওয়াই জগতের নিয়ম
কেবল আমাদের বয়স, ক্রোধ আর ভালোবাসাই নয়
সবই বদলে যায়
দেখলে তো, পুরো রাশিয়া বদলে গেল!

Встреча

Встреча

Как сильно изменился ты! —
Воскликнул я. И друг опешил.
И стал печальней сироты…
Но я, смеясь, его утешил:

Меняя прежние черты,
Меняя возраст, гнев на милость,
Не только я, не только ты,
А вся Россия изменилась!..

রুটি

আমার ট্রাভেল ব্যাগে চিজ আর কুকিজ থাকবেই
শখ করে অ্যালমন্ডও নিই
কিন্তু রুটি নিতে চাই না,
জানো তো, ওসবে কত ঝক্কিঝামেলা!
কী দরকার এত দূরের পথে ওজন বাড়ানোর!

কিন্তু দাদি ব্যাগে রুটি দিয়ে দেন
যদিও জানেন আধুনিক পৃথিবীর গতি!
তবু বলেন, “এই বুড়ি দাদির কথা শোন,
রুটিকে বইতে হবে না,
ও তোর ভারও বইবে ।”

Хлеб

Хлеб

Положил в котомку
сыр, печенье,
Положил для роскоши миндаль.
Хлеб не взял.
— Ведь это же мученье
Волочиться с ним в такую даль! —
Все же бабка
сунула краюху!
Всё на свете зная наперед,
Так сказала:
— Слушайся старуху!
Хлеб, родимый, сам себя несёт…

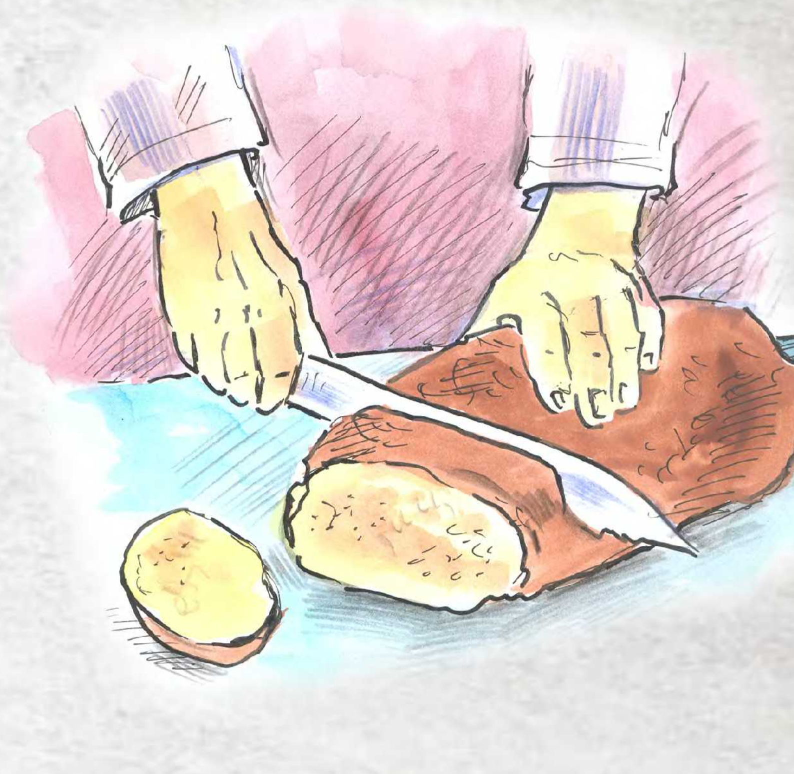

ভোভা নামের ছেলেটি

তেড়ে আসে গোরু
'দূর হও!' ভোভার গলা হয়ে আসে সরু
কিন্তু গোরু পালায় না
কী বলবে ভোভা ভেবে পায় না
কী করবে তাও বুঝতে পারে না
গোরুর দিকে তাকিয়ে কেঁদে ওঠে ভোভা
বেচারা ভোভা!

Мальчик Вова.

Мальчик Вова

Подошла к нему корова.
— Уходи! — сказал ей Вова.
А корова не уходит.
Вова слов уж не находит,
Не поймет, что это значит,
На нее глядит и плачет…

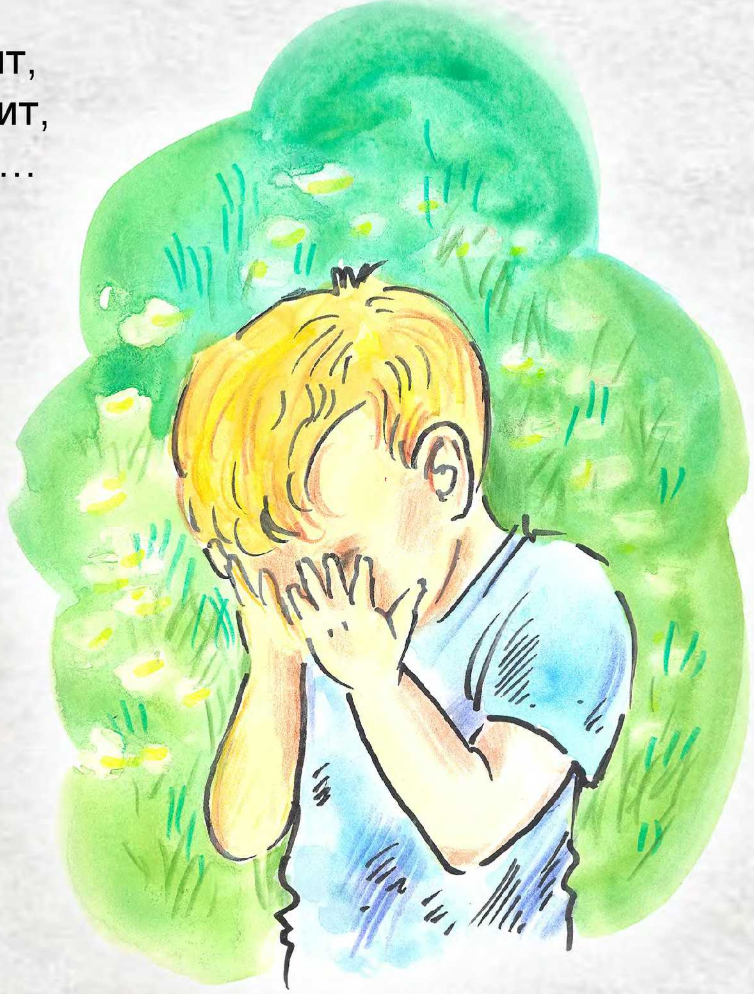

এক যে ছিল খরগোশ

ভীষণ অরণ্যের মাঝে ছিল এক খরগোশ
ঘাসের বনে ছুটতে তার লাগে বড়ো খোশ
আমি বন পেরিয়ে বাড়ি ফিরছিলাম যেদিন
খরগোশটা আমাকে দেখে পিলে চমকালো সেদিন!
বেচারা ছুট দেয় পাইনের বনে
আমি ওকে ডাকতেই আরও জোরে ছোটে
মনে হয় শাপ-শাপান্তই করছিল
নিশ্চয়ই ভাবছিল কোনো মানুষ বন্ধু হতে পারে না
একমাত্র ম্যাজাই* দাদু ছাড়া

Про зайца

* ম্যাজাই দাদুর গল্প মূলত রুশ কবি নিকোলাই নেকরাসভের বিখ্যাত কবিতা ‘দেদ ম্যাজাই ই জায়সি’ (Ded Mazai i Zaytsy বা ম্যাজাই দাদু এবং খরগোশ) থেকে এসেছে। এই কবিতায় দাদু ম্যাজাইকে দেখানো হয়েছে একজন দয়ালু ও সহানুভূতিশীল বৃদ্ধ হিসেবে, যিনি বন্যার সময় নৌকায় করে খরগোশগুলোকে উদ্ধার করেন। এই গল্পটি রাশিয়ান সংস্কৃতিতে দয়া, মানবিকতা ও পরিবেশের প্রতি ভালোবাসার উদাহরণ হয়ে ওঠে এবং পরে লোককথার আকারে জনপ্রিয়তা পায়।

Про зайца

Заяц в лес бежал по лугу,
Я из лесу шел домой, —
Бедный заяц с перепугу
Так и сел передо мной!

Так и обмер, бестолковый,
Но, конечно, в тот же миг
Поскакал в лесок сосновый,
Слыша мой веселый крик.

И еще, наверно, долго
С вечной дрожью в тишине
Думал где-нибудь под елкой
О себе и обо мне.

Думал, горестно вздыхая,
Что друзей-то у него
После дедушки Мазая
Не осталось никого.

কাক

বসলো কাক বেড়ার ওপর
তালাবদ্ধ সমস্ত গোলাঘর,

চলে গেল সব মালগাড়ির বহর
কাটে না এই আকালের প্রহর!
আজ বহুদিন ধরে।

কাকটি দিনমান উশখুশ করে
নেই শীতের আশ্রয়;
নেই কোনো দানা!
বেচারা!

ворона

Ворона

Вот ворона сидит на заборе.
Все амбары давно на запоре.
Все обозы прошли, все подводы,
Наступила пора непогоды.

Суетится она на заборе.
Горе ей. Настоящее горе!
Ведь ни зернышка нет у вороны
И от холода нет обороны…

উইলো

উইলো, কেন তুমি বাড়ো নাব্য নদীর কূলে?
কেন তুমি চুমু খাও নদীর ঘোলা জলে?
যেন অথৈ জল শান্ত করো এক মায়াবী ছলে

ইস্টিমারের ঢেউ ভেঙে যায় তোমার কাছে এসে
তোমার প্রেমের বেদি ক্ষয়ে যায় নীরবে
যদি তুমি তা জানতে!

দূর পাহাড়ের কোলে এক গির্জার তলে
রোদ ঝলমল করে দিঘির শান্ত জলে
তোমার বোন উইলো জলকেলি করে
ভালোবাসার নীরব প্রশ্রয়ে!

ИВА

Ива

Зачем ты, ива, вырастаешь
Над судоходною рекой
И волны мутные ласкаешь
Как будто нужен им покой?

Преград не зная и обходов,
Как шумно, жизнь твою губя,
От проходящих пароходов
Несутся волны на тебя!

А есть укромный край природы,
Где могут, родственно звуча,
В тени струящиеся воды
На ласку лаской отвечать…

ЧЛЕН СОЮЗА РУССКИХ ХУДОЖНИКОВ
г. Москва
ОЛЕГ МАЛИНИН
художник
Вологда
vk.com/malinin.oleg35
malinin.oleg35@yandex.ru
Малинин Олег Борисович

নিকোলাই রুবৎসভ: সাক্ষাৎ
রুশ এবং বাংলা ভাষায় শিশুতোষ কবিতা
সম্পাদনা : ইয়েভগেনি স্পিরিন
বাংলায় অনুবাদ: শামসুদ্দোহা তৌহীদ
অলংকরন: অলেগ মালিনিন

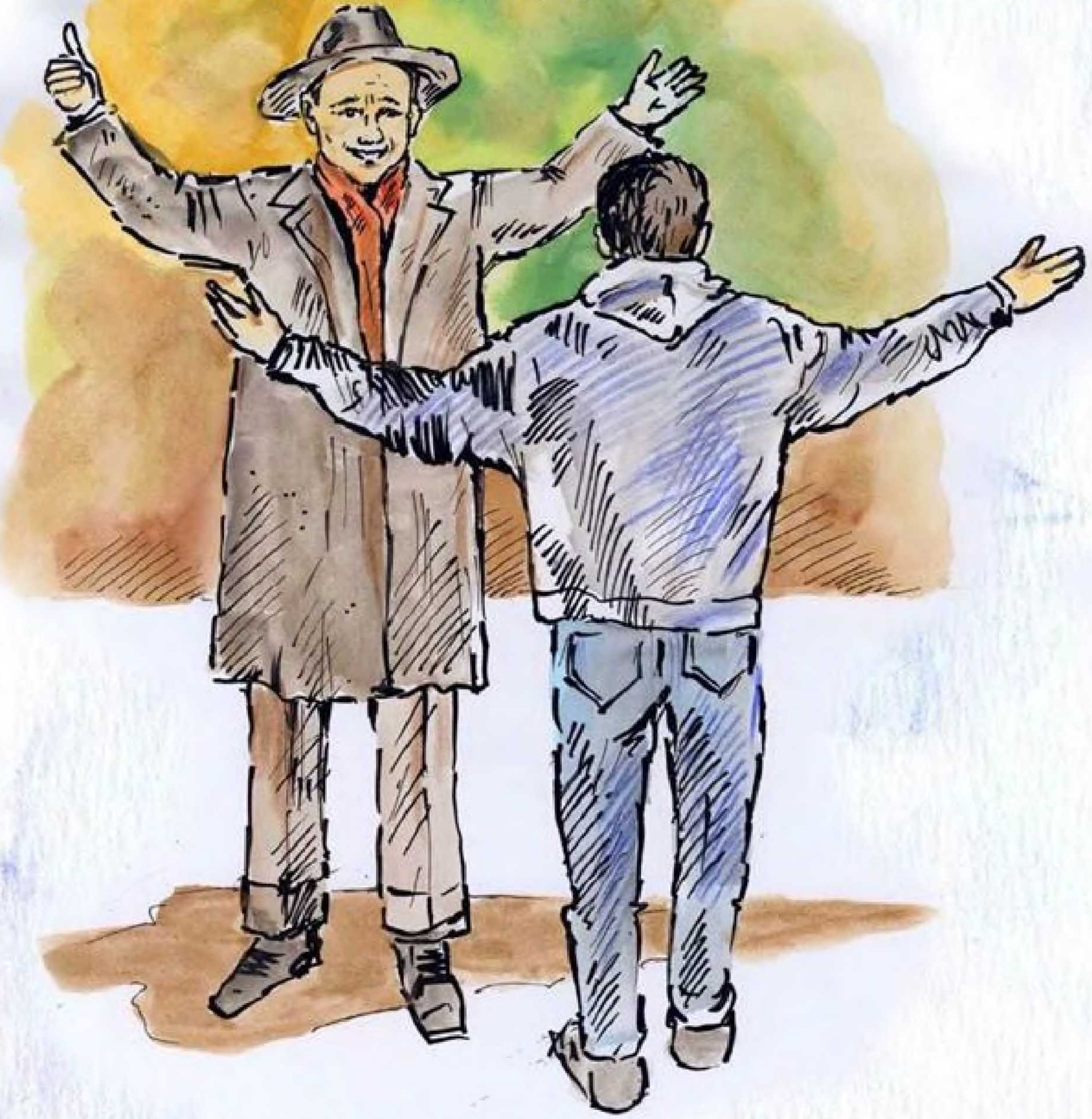

Стихи для детей на русском и бенгальском языках

Редактор издания: Евгений Спирин. (г. Сосновоборск. Красноярский край)
Перевод на бенгальский: Шамсуддуха Таухид. (г. Барисал. Бангладеш)
Художник: Олег Малинин. (г. Вологда)